भगवान ब्रह्मा को खुश करने के लिए रावण ने कई वर्षों तक बहुत कठिन तप किया । एक दिन ब्रह्मदेव को मनाने के लिए रावण ने अपना सिर काट दिया । जब उसने अपना सिर काटकर यज्ञ में डाला तो उसका सिर अपने आप उसके शरीर से जुड़ गया । रावण ने कई बार अपना सिर काटने का प्रयास किया किंतु हर बार वह सिर उसके शरीर से जुड़ जाता था । वह अपना सिर तब तक काटता रहा जब तक ब्रह्मदेव उसके सामने नहीं आ गए । रावण के इस समर्पण से खुश होकर ब्रह्मदेव ने उसे दस सिर का वरदान दे दिया और तब से रावण सर्वशक्तिमान और सर्वश्रेष्ठ राजा बन गया । कहा जाता है कि प्रकांड पंडित और महान ज्ञानी रावण के दस सिर में से 6 सिर शास्त्रों और 4 सिर वेदों के प्रतीक हैं ।